International Journal of Jyotish Research: 2020; 5(2): 22-23

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2020; 5(2): 22-23
© 2020 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 14-09-2020
Accepted: 18-10-2020

डॉ0 अम्बुज त्रिवेदी
सहायक आचार्य, ब्रजभूषण संस्कृत महाविद्यालय, गया, बिहार, भारत

Correspondence
डॉ0 अम्बुज त्रिवेदी
सहायक आचार्य, ब्रजभूषण संस्कृत म महाविद्यालय, गया, बिहार, भारत

अन्नप्राशन–संस्कार

डॉ0 अम्बुज त्रिवेदी

प्रस्तावना

अन्नप्राशन का अर्थ है– अन्न जिसे श्रीमद्भगवद्गीता में कहा है 'अन्नाद्भवन्ति भूतानि' अर्थात् सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, हमारे शास्त्रों में अन्न को ही प्राण कहा गया है, प्राशन अर्थात् उसको ग्रहण करना। तात्पर्य यह है कि अन्न का प्रथम बार शिशु को प्राशन कराना अन्नप्राशन संस्कार कहलाता है। अन्न रूपी प्राण को ग्रहण कर बालक शारीरिक व मानसिक रूप से बलवान एवं प्रबुद्ध बनें। तन और मन को सुदृढ़ बनाने में अन्न का सर्वाधिक योगदान है। शुद्ध, सात्विक एवं पौष्टिक आहार से ही तन स्वस्थ रहता है और स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। आहार शुद्ध होने पर ही अन्तःकरण की शुद्धि होती है तथा उससे मन, बुद्धि, आत्मा सबका पोषण होता है। चिकित्साशास्त्र के अनुसार भी पाँच से छः महीने के बाद बालक के शरीर को ठोस आहार की आवश्यकता होती है। उसके शरीर की आवश्यकता की पूर्ति अब केवल दूध से ही नहीं होती, उसे दूध के साथ–साथ अन्न की भी आवश्यकता प्रतीत होती है। सुश्रुत के अनुसार छठें महीने में बच्चे को माँ के स्तन से अलग कर देना चाहिए तथा उसे अन्न पर निर्भर होने की आदत डालनी चाहिए।

षण्मासं चैनमन्नं प्राशयेल्लघु हितञ्च[1] ।

इसलिये इस संस्कार का हमारे जीवन में विशेष महत्त्व है। अतः गृह्यसूत्रों, धर्मशास्त्रों, ज्योतिषशास्त्र में वर्णित शुभ मुहूर्त्त, शुभ दिन, शुभ नक्षत्रों में विधिपूर्वक शिशु को प्रथम भोजन कराना चाहिए। क्योंकि धर्मबुद्धि से जितने कार्य किये जाते हैं वे सभी आध्यात्मिक चेतना को उत्पन्न करते हुए जीवन में कल्याणदायक होते हैं।

विहित काल–

गृह्यसूत्रों के अनुसार यह संस्कार शिशु के जन्म के पश्चात् छठे मास में करना चाहिए। जैसा कि पारस्कर गृह्यसूत्र में वर्णित है–

षष्ठे मासेऽन्नप्राशनम्[2]।

मनु एवं याज्ञवल्क्य स्मृति आदि प्राचीन ग्रन्थों में भी जन्म से छठे महीने में अन्नप्राशन संस्कार करना चाहिए, ऐसा वर्णन मिलता है।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार

जन्म समय से छठे मास से आरम्भ कर समसंख्यक मासों में बालकों का तथा पांचवें मास से प्रारम्भ कर विषम संख्यक मासों में कन्या का अन्नप्राशन करना चाहिए।

षष्ठात् समे मास्यथ हि मृगदृशां पञ्चमादोजमासे।

ज्योतिषशास्त्रानुसार अन्नप्राशन मुहूर्त्त–

रिक्तानन्दाष्टदर्शं हरिदिवसमथो सौरिभौमार्कवारा–
ल्लग्नं जन्मर्क्षलग्नाष्टमगृहलवगं मीनमेषालिकं च।
हित्वा षष्ठात्समे मास्यथ हि मृगदृशां पञ्चमादोजमासे
नक्षत्रैः स्यात्स्थिराख्यैः समृदुलघुचरैर्बालकान्नाशनं सत्[3]।।

शुभ नक्षत्र–
रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, पुष्य, अश्विनी, अभिजित्, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, स्वाति, शतभिषा इन नक्षत्रों में शुभ होता है।

विहित तिथि–
द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, सप्तमी, दशमी, त्रयोदशी, पूर्णिमा ये तिथियाँ शुभ होते हैं।

शुभवार–
चन्द्रवार (सोमवार), बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार ये श्रेष्ठ वार होते हैं।

लग्न–शुद्धि–
1, 4, 7, 5, 9, 3 स्थानों में शुभ ग्रह हो, लग्न से 10वाँ स्थान ग्रह रहित हो, तथा 3, 6, 11 स्थानों में पापग्रह हो एवं 6 एवं 8 स्थानों में चन्द्रमा न हो तो अन्नप्राशन शुभ कहा गया है।

संस्कार–विधि–
चन्द्रबल एवं ताराबल का विचार करके शुभ मुहूर्त्त में पूर्वाह्ण काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धौतवस्त्र–तिलक आदि धारण कर प्रातः सन्ध्यादि से निवृत्त होकर–

.....अमुक तिथौ.....अमुक वासरे.....अमुक नक्षत्रे.....
इदं मम कुमारं अमुक शर्माणम् अन्नप्राशनसंस्कारेण संस्करिष्यामि।

ऐसा संकल्प करें। तत्पश्चात् गौरी–गणेश पूजन, मातृका पूजन, नान्दी श्राद्धादि करके खीर पकाकर आहुति दें। अग्नि–सोम के लिए दो आहुति होती है।
अधोलिखित मंत्र को पढ़कर प्रथम आहुति डालनी चाहिए–

मन्त्र–

देवीं वाचमजनयन्त देवस्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टु तै तु स्वाहा[4]।।

इस मन्त्र द्वारा प्रथम आहुति कर पुनः इसी मन्त्र को कहकर अन्त में अधोलिखित मन्त्र से दूसरी आहुति करनी चाहिए–

मन्त्र–

वाजो नो अद्यन प्रसुवाति दानं वाजो देवाँ ऋतुभिः कल्पयाति।
वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा आशा वाजपतिर्जयेयं स्वाहा[5]।।

मन्त्रार्थ–
हे अन्न के अधिष्ठातृ देवता! आज से अन्नदान की दृष्टि से हमें पहचान लें। उचित अवसर आने पर हम अन्न से देवताओं को हवियाँ प्रदान करें। अन्नमय ब्रह्म से ही हमारे सभी सन्तानों का जन्म हुआ है। अतः हम अन्नधन से समृद्ध होकर सभी दिशाओं में विजयी बनें।
तदुपरान्त चरु (हवन या यज्ञ की आहुति के लिए पकाया हुआ अन्न) की चार आहुतियाँ निम्नलिखित मंत्र से दें–

मन्त्र–

प्राणेनान्नमशीय स्वाहा, अपानेन गन्धानशीय स्वाहा,
चक्षुषा रुपाण्यशीय स्वाहा, श्रोत्रेण यशोऽशीय स्वाहा।।

तदनन्तर होम किये हुये अन्न को दही, मधु और घृत में मिलाकर बच्चे को एक बार खिलाना चाहिए। इसके बाद अपनी इच्छानुसार एक या दस ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। इस प्रकार यह अन्नप्राशन संस्कार सम्पन्न होता है।

संदर्भ

1. सुश्रुत संहिता, शरीर स्थान, 10/134
2. पारस्कर गृहय सूत्र – 1/19/1
3. मुहूर्त्तचिन्तामणि, संस्कार प्रकरण– श्लो0 17
4. पारस्करगृहय सूत्र – 1/19/2
5. यजुर्वेद संहिता – 18/33)